CCRH Quarterly Bulletin
Vol. 14 (1 & 2) 1992

*केन्द्रीय होम्योपेथी अनुसंधान परिषद् का भारत में शोधकार्य**

डी.पी.रस्तोगी १

सार संक्षेप :

भारत के विभिन्न भागों में स्थित केन्द्रीय होम्योपेथी अनुसंधान परिषद् (सी.सी.आर.एच.) की 51 इकाइयों/संस्थानों में नैदानिक अनुसंधान की गतिविघ्रियाँ संचालित की जा रही हैं जिनमें आदिवासी क्षेत्रों में शोधकार्य सम्मिलित है। इन गतिविधियों के अन्तर्गत महामारियों का कार्य,नैदानिक पुष्टिकरण, औषधि अनुसंधान और मानकीकरण,औषधीय जड़ीबूटियों का सर्वेक्षण और संग्रह,अभिलेखीकरण के अतिरिक्त साहित्यिक एवं प्रायोगिक अनुसंधान भी आते हैं। पाँच शोध संस्थानों तथा पन्द्रह नैदानिक अनुसंधान इकाइयों में इक्कीस नैदानिक प्रायोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। औषधि अनुसंधान तथा मानकीकारण का कार्य होम्योपैथिक औषधि अनुसंधान संस्थान तथा दो मानकीकरण इकाइयों में किया जा रहा है। औषधि वनस्पतियों के संग्रह तथा सर्वक्षण में एक इकाई लगी हुई है। आदिवासी क्षेत्रों में नैदानिक अनुसंधान की 22 इकाइयाँ सक्रिय हैं ।

मूल शब्द : नैदानिक अनुसंधान,औषधि सिद्धिकरण, औषधि अनुसंधान,भारत में होम्योपेथी ।

परिचय:

अनुसंधान का अर्थ ज्ञान संपदा में वृद्धि के लिए व्यवस्थित खोज कार्य को करना है। भारत में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अर्न्तगत एक सर्वोच्च संस्था है, जिसे केन्द्रीय होम्योपेथी अनुसंधान परिषद(सी.सी.आर.एच.)कहा जाता है, जो होम्योपेथी अनुसंधान के क्षेत्र में सक्रिय है। सी.सी.आर.एच. का दायित्व है अनुसंधान के विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध में पहल करना उसका मार्गदर्शन और संचालन करना। यह कहा जा सकता है कि भारत में संगठित होम्योपेथी अनुसंधान का श्रीगणेश ही सी.सी.आर.एच. द्वारा किया गया। आज दिन तक परिषद द्वारा प्रारंभ किए गए विविध अनुसंधान कार्यक्रमों को निम्न शीर्षकों में रखा जा सकता है -

अ. नैदानिक अनुसंधान
ब. औषधि सिद्धीकरण
स. औषधि मानकीकरण/ अनुसंधान(बहुक्षेत्रीय)
द. औषधीय वनस्पतियों का सर्वेक्षण और संकलन
क. नैदानिक पुष्टि
ख. अभिलेरवीकरण
ग. साहित्यिक अनुसंधान
घ. प्रायोगिक अनुसंधान

(अ) नैदानिक अनुसंधान:

सी.सी.आर.एच. की प्रमुख गतिविधि नैदानिक अनुसंधान को निम्न केन्द्रों पर संचालित किया जा रहा है:-

१.पाँच नैदानिक अनुसंधान केन्द्र - कोट्टायम में पचास बिस्तरों के अस्पताल सहित,गुडिवाड़ा और बम्बई में पच्चीस-पच्चीस बिस्तरों के अस्पताल सहित, जयपुर और पुरी में दस-दस बिस्तरों के अस्तपाल सहित,और
2. भारत के विभिन्न भागों में इक्कीस शोध केन्द्र पर।

नैदानिक अनुसंधान के लक्ष्य निम्नानुसार हैं -

1. रुग्णता की उग्र अवस्था में कमी लाने और रोग की उस अवस्था के प्रत्यावर्तन,तीव्रता को कम करने में होम्योपेथिक औषधि के प्रभाव का अध्ययन तथा विषदोष, आनुवंशिकता,पर्यावरण तथा अन्य तत्वों का अध्ययन।
2. औषधि के विकृति जनन(पेथोजेनेसिस) की नैदानिक पुष्टि।
3. नवीन नैदानिक लक्षणों का स्पष्टीकरण तथा नैदानिक औषधि चित्रों का मूल्यांकन।
4. निम्न संदर्भो में सर्वाधिक प्रभावकारी होम्योपेथिक औषधि समूह का निर्धारण-
   —उनके विश्वस्त लक्षणों,समुचित शक्तियों और उनके दिए जाने की समयावधि की पहचान,तथा
   —अन्य औषधियों से उनके सम्बन्धों,यथा पूरक,प्रतिषेधी और विरोधी, का निर्धारण।
5. उपरोक्त की औषधि-संचय अनुक्रमाणिका (Repertorial Indices) तैयार करना।

इन वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए इस अनुसंधान कार्य को

१. रोगपरक नैदानिक अनुसंधान और 2. औषधि नैदानिक अनुसंधान के दो वर्गों में विभाजित किया गया है।

साभार : हनिमन दिशा ३, ग्वालियर

१. निर्देशक, केन्द्रीय होम्योपेथी अनुसंधान परिषद्, जनकपुरी, नई दिल्ली

CCRH Quarterly Bulletin
Vol. 14 (1 & 2) 1992

1. रोगपरक नैदानिक अनुसंधान:

इस प्रकार का अनुसंधान सर्वाधिक प्रभावकारी होम्येपेथिक औषधि समूह को निश्चित करने के लिए किया जाता है। यह अनुसंधान निम्न संदर्भों में प्रदत्त विकृतिजन्य परिस्थितियों में किया जाता है।

- उनके विश्वस्त लक्षणों की पहचान
- उनकी सर्वाधिक उपयोगी शक्तियों की पहचान
- उन्हें दिए जाने की विश्वस्त समयावधि
- औषधि संचयिका के अनुक्रम तैयार करना
- (क) अन्य औषधियों,जैसे कौनसी अच्छी परपर्ती औषधि है,पूरक, सजातीय,अंत:प्रवाही या अनुरुप इत्यादि है।
- (ख) किसी विशिष्ट रोग में संकेत-लक्षण चिन्हों में सुधार की दृष्टि में सम्बन्धों का निर्धारण।

नैदानिक अनुसंधान के क्षेत्र में इक्कीस प्रयोजनाओं का कार्य किया जा रहा है।

No. क्रमांक	Disease रोग	Drugs Found Effective औषधियाँ जो उपयोगी पाई गई
1.	अमीबा रुग्णता Amoebiasis	नक्स वोमिका 30C, 200C, एटिस्टा इन्डिका हालेरेना एन्टी- डीसेन्टेरीका Q,3D, 6D, सल्फर 30C, 200C, लायकोपोडियम 30C, 200C, एलोस 30C,200C, आर्सेनिक एल्बम 30C,200C।
2.	आचरण दोष Behavioural disorders	सल्फर 30C, 200C, IM,10M, बेलोडोना 30C, 200C, IM, स्ट्रेमोनियम 30C, 200C,IM,इग्नेशिया 200C, IM नक्स वोमिका 200C, IM , पल्साटिला 30C, 200C, IM, लेकेसिस 30C, 200C, IM, फास्फोरस 30C, 200C,IM
3.	श्वसनी दमा Bronchial Asthma	अमोनियम कार्ब 30C, एन्टिम टार्ट 30C, एन्टिम आर्स 6C, 30C; आर्स एल्ब 6C, 30C, 200C, IM, 10M, 50M, CM,आर्स आयोड 6CM,30C,एरालिया रेसीमोसा 6C, 30C, 200C, बेसिलिनम 200C, IM, 10M, ब्लाटा ओरि. Q, 6C, ब्रायोनिया 30C, 200C, IM, कार्बोवेज 6C, 30C, 200C, IM, 10M, सिना 30C, 200C, ग्रिन्डेलिया Q, हीपरसल्फ IM, इपीकाक 3C, 6C, 30C, 200C, IM 10M,काली बाइक्रोम 30C, 200C, IM, काली कार्ब 6C, 30C, 200C, काली आयोड. 30C, 200C, IM, लेकेसिस 30C, 200C, IM, मेडोराइनम 30C, 200C, IM, नेट्रम म्यूर 30C, 200C, IM, नेट्रम सल्फ 30C, 200C, IM, नक्स वोमिका 6C, 30C, 200C, IM, पोथोस Q, 30C, पल्साटिला 6C, 30C, 200C, IM, 10M, सेनेगा 6C, 30C, स्पोंजिया 6C, 30C, 200C,सल्फर 30C,200C,IM।
4.	गर्भाशय ग्रीवा शोथ तथा गर्भाशय ग्रीवा अपरदन Cervicitis and cervical erosion	सीपिया 6C, 30C, 200C, IM, सिमिसी-फयुगा 200C, पल्साटिला 6C, 30C, 200C, IM, 10M, क्रियोजोट 6C, 200C आर्सेनिक 200C,एल्यूमिना 30C, 200C, हीपर सल्फ 6C, केलंक कार्ब 30C, 200C, IM, 10M, नेट्रम म्यूर 30C, 200C ,IM ,मर्क सॉल 30C,200C।
5.	मधुमेह Diabetes Mellitus	एसिड फास 3C,लाइको 30C, 200C, IM, नेट्रम म्यूर 30 200, पल्साटिला 6, 30, 200, IM, सल्फर 30, 200, IM, सिफिलिनम 30, 200, IM, 10M, यूरेनियम नाइट्रिकम 30, 200.
6.	औषधि व्यसन Drug De Addiction	नक्स वोमिका 30,200,पेसीफलोरा Q,एवीना सेटायवा Q
7.	पेचिश Dysentery	नक्स वोमिका 30, मर्क साल 30, 200, आर्स एल्ब 30, 200, मर्क कॉर 30, 200
8.	मिर्गी Epilepsy	एगारीकस 200, बेलोडोना 30, 200, कास्टीकम 30, 200, IM, सिक्यूटा 200, क्यूप्रम मेट 200, लाइको 200, लेकेसिस 30 200, नेट्रम म्यूर 200, सल्फर 200, केल्केरिया कार्ब 200, सिना 200, जेल्सीनियम 200, नक्स वोमिका 200।
9.	हाथी पाँव Filaria	रसटाक्स 30, 200, ब्रायोनिया 30, 200, एपिस 30, 200, आर्स एल्ब 30, 200 रोडोडेन्ड्रान 200
10.	मलेरिया Malaria	आर्स एल्ब 30, 200, IM,एल्स्टोनिया 6, 30, चायना 30 200, IM, चायना आर्स 30, IM, यूपेटोरियम पर्फ 30, 200, जेल्सीनियम 30, 200, इपिकाक 30, 200 नेट्रम म्यूर 30, 200, IM, निकटेनथिस आर 6, पल्साटिला 30, 200, रसटॉक्स 30, 200, IM।

11.	दुर्दम रोग Malignant Diseases	एपिस 200, आर्स 200, बेलिस पेरि. Q, बायोनिया 200, केल्के रया कार्ब 200, IM
12.	अस्थि संधि शोथ Osteo arthrits	रसटाक्स 200, IM, CM, लाइको 30, 200, IM, ब्रायोनिया 200, सल्फर 30, 200, फारमिका रुफा 30, 200, केल्केरिया कार्ब IM, 50M, थूजा 200, IM, आर्निका 200 IM, काली कार्ब 200, सिफिलिनम IM
13.	पौष्टिक अल्सर Peptic Ulcer	नक्स वोमिका 3D, 30, 200, आर्स एल्ब 30, सल्फर 200, फासफोरस 30, 200
14.	पोलियो मेरुरज्जु शोथ Polio Myelitis	लेथायरस सेटा 30, 200, IM, टेरिबिन्थ 30, 200, IM, रसटाक्स IM, कास्टीकम IM, 10M, जेल्सीमियम IM, प्लम्बम मेट 200, IM
15.	वृक्क पथरी Renal Calculi	बर्बेरिस वल Q, 30, 200, ब्रायोनिया 200, IM, केन्थिरिस Q, 6, 30, कोलोसिनथ 6, हायड्रानजिया Q, लाइकोपोडियम 30, 200, IM, नक्स वोमिका 30, IM, ओसिमम केन Q, पल्साटिला 200, IM, सार्सापेरिला 30, 200, टेरिबिन्थेनिनम 30, 200, IM, अर्टिका यू.6C, 30
16.	संधि आमवात Rheumatoid Arthritis	ब्रायोनिया 30, 200, IM, लेकेसिस 30, 200, मेडेरिनम 200, IM,10M, 50M, रसटॉक्स 30, 200, IM,10M 50M
17.	दात्र कोशिका अरक्तता Sickle Cell Anaemia	आर्स एल्ब 30, 200, बायोनिया, 30, 200, नेट्रम म्यूर 30 200, रसटॉक्स 6, 30, 200, सल्फर 200

वे कुछ औषधियां जो रोग विशेष में प्रभावकारी हैं:

1.	अमीबा रुग्णता Amoebiasis	ईगल फोलिया,एटिस्टा इन्डिका, सायनोडोन डेक्ट,होलेराइना एंटीडीसेन्ट्रीका ।
2.	श्वसनी दमा Bronchial Asthama	वायबर्नम ओप, एस्पीडोसपर्मा, केसियो सोफेरा
3.	मधुमेह Diabetes Melitus	सिफिलेन्ड्रा इन्डिका
4.	हाथी पाँव Filaria	एपिस मे ल ब्रायो निया, लाइको पेडियम मर्कसाल, नेट्रम म्युर, पल्साटिला, रोडो, रसटॉक्स, सल्फर
5.	पित् पथरी Gall Stones	फेलटॉरी 2D अथवा 3D
6.	कृमि रुग्णता Helminthiasis	चीलोन, सिना, क्यूप्रम आक्सी, इम्बेलिया, ट्यूक्रियम, थाइमॉल
7.	गर्भ अवस्थिति विकार Malposition of the Human Foetus	पल्साटिला 200
8.	अत्यार्तव Menorrhagia	फाइकस रिलिजियोसा Q
9.	गर्भाशय अर्बुद्ध Uterine Fibroids	आरम म्यूर.नेट. 3D
10.	प्राथमिक श्वित्र Vitiligo	आर्स सल्फ फलेवस 6D

(ब) औषिधि सिद्धीकरण

होम्योपेथी पद्धति के प्रारंभ से सही इसके विकास में औषधि सिद्धीकरण की विशिष्ट भूमिका रही है। केवल इसी आधार पर होम्योपेथिक औषधियों का उपचार शास्त्र खड़ा हुआ है। केन्द्रीय होम्योपेथिक अनुसंधान परिषद में औषधि सिद्धीकरण का कार्य पांच केन्द्रों पर संचालित किया जाता है। यह केन्द्र पश्चिम बंगाल में मिदनापुर और कलकत्ता,उत्तरप्रदेश में लखनऊ और गाजियाबाद तथा नई दिल्ली (होम्योपेथी का क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान) में स्थित हैं।

भारत में दो अलग-अलग केन्द्रों पर औषधि सिद्धीकरण का कार्य ड्रिसडेल की डबल ब्लाइंड पद्धति से विभिन्न आयुवर्ग के पुरुषों और स्त्रियों पर संचालित किया जाता है। विविध स्रोतों से प्राप्त डाटा का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाता है और अंततः सी.सी.आर.एच. मुख्यालय पर केन्द्रीय ड्रग प्रूविंग कम डाटा प्रोसेसिंग सेल में उसका संकलन किया जाता है। अन्तिम पड़ताल के बाद इस डाटा को होम्योपेथी बिरादरी के नैदानिक उपयोग के लिए लधु प्रबन्धों के रुप में प्रकाशित किया जाता है। औषधि सिद्धिकरण अनुसंधान एक निरन्तर चलने वाला कार्यक्रम है।

अब तक 29 औषधियों के सिद्धीकरण का कार्य सम्पन्न किया जा चुका है। काली म्युरीएटेकम,एबरोमा आगस्टा,केसिया सोफेरा और सायनोडोन डेक्टाइलान के सम्बन्ध में लधु प्रबन्ध प्रकाशित किए जा चुके हैं। इगल

फोलिया,बेराइटा आयोडेटा,बोरेविया डिफयूजा,क्यूप्रम आक्सीडेटम नाइग्रम,फार्मिक एसिड,हाइड्रोकोटाइल एसियाटिका,अरेनिया डायडिमा, माइगेल, टेरेन्टुला क्यूबेन्सिस और टैरेन्टुल हिस्पानिका के सम्बन्ध में विवरण सी.सी.आर.एच.के त्रैमासिक बुलेटिन के विभिन्न अंको में प्रकाशित किए गए हैं।

सी.सी.आर.एच. द्वारा सिद्धीकृत औषधियों की पूरी सूची निम्न है- एबरोमा आगस्टा,इगल फोलिया,एटिस्टा इन्डिका,बेराइटा आयोडेटा,बोरेविया डिफयूजा, केसिया सोफेरा,क्यूप्रम आकसीडेटम नाइग्रम,साइनोडोन डेक्टालोन,एम्बेलिया राइब्स,फार्मिक एसिड,हाइड्रोकोटाइल एसियाटिका,काली म्यूरीएटिकम, थिया चाइनेसिस,एरानिया साइनेन्सिया,इगल मार्मेलोस,चीलोन,टेला एरानिया, होलारेना एन्टीडाइसेन्टेरिका, टाइलोफोरा इन्डिका, एजाडिरक्टा इन्डिका, थाइमोल, केसिया फिस्टुला और लेपिस एल्बा।

(स) औषधि मानकीकरण अनुसंधान (बहुक्षेत्रीय)

होम्योपेथी में जितना औषधि का शुद्ध होना आवश्यक है,उतना ही सफलता के लिए सावधानी के साथ रोग विवरण तैयार करना तथा औषधि चयन भी आवश्यक है। इस उद्देश्य के लिए केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद ने गाजियाबाद,हैदराबाद और लरवनऊ में औषधि मानकीकरण इकाइयां स्थापित की है। इन केन्द्रों पर होम्योपेथी औषधियों के शरीरवृत्यात्मक (80 औषधियों),भेषजगुणीय(63 औषधियों), भेषज अभिज्ञानक (93 औषधियों) तथा ऊतक रासायनिक (6 औषधियों)गुणों का विस्तृत मूल्यांकन किया जा रहा है।

गाजियाबाद की इकाई में अपरिष्कृत औषधि, मूलार्क और शक्तियों का अध्ययन किया जाता है। रोग विषनिर्मित औषधियां तैयार करने की एक पद्धति भी विकसित की गई है।

(i) औषधीय वनस्पतियों का सर्वेक्षण और संग्रह

चूंकि सत्तर प्रतिशत होम्योपेथिक औषधियों का स्रोत वनस्पितयाँ हैं, इसलिए सी.सी.आर.एच. अपनी आवश्यकता उन क्षेत्रों में पूरी करती है जहां औषधीय वनस्पतियाँ बहुतायत में उगती हैं। यह वनस्पतियाँ औषधि मानकीकरण इकाइयों को भेज दी जाती हैं। तमिलनाडु सरकार ने हमारी उदगामंडलम (ऊटी) इकाई को १२.७० एकड़ भूमि प्रदान की है,जहाँ सी.सी.आर.एच.द्वारा औषधीय वनस्पतियों की खेती और उनसे औषधियों का उत्पादन प्रारंभ होने जा रहा है। ऊटी की औषधीय वनस्पति सर्वेक्षण और संग्रह इकाई के द्वारा चौदह सर्वेक्षण कार्यक्रम संपन्न किए गए है तथा वह सी.सी.आर.एच.के विभिन्न संस्थानों और इकाइयों को,जहां औषधि मानकीकरण के अध्ययन किए जा रहे हैं, चौदह अपरिष्कृत औषधियां प्रदाय कर रही है।

(ii) नैदानिक पुष्टि

सी.सी.आर.एच. की औषधि सिद्धीकरण इकाइयों में सिद्धिकृत औषधियों की नैदानिक पुष्टि गाजियाबाद,वृन्दावन,पटना (नैदानिक पुष्टि इकाईयाँ) नई दिल्ली (क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान) लखनऊ (होम्योपेथिक औषधि अनुसंधान संस्थान) तथा जयपुर (मलेरिया पर होम्योपेथिक अनुसंधान संस्थान) में की जाती है।

इन केन्द्रों को 62 से अधिक औषधियां नैदानिक पुष्टि के लिए भेजी गई है। इनमें से कुछ लधु प्रबंधो के रुप में और अन्य सी.सी.आर.एच.की त्रैमासिक बुलेटिन के विभिन्न अंको में प्रकाशित की जा चुकी हैं।

(ग) अभिलेखीकरण

विशिष्ट प्रकार के अभिलेखों को अभिलेखीकरण किया जाता है। सी.सी.आर.एच. के अनुसंधान और विकास प्रयत्नों से अभिलेखीकरण गतिविधियों का गहरा संबंध है। सी.सी.आर.एच.के अभिलेखीकरण के विविध क्षेत्रों को निम्न शीर्षकों में रखा जा सकता है-

1. नवीनतम सूचना सेवा (करेंट अवेयरनेस सर्विस सी.एच.एल.ए.एस.)
2. अनुक्रमणीकरण तथा सूक्ष्मीकरण
3. विशिष्ट विषयों का ग्रन्थ विवरण
4. समाचार संकलन
5. अभिलेखीकरण तथा
6. प्रकाशन

१. नवीनतम सूचना सेवा -

इस सेवा के अन्तर्गत सूचनाओं का उपयोग करने वालों को डाटा के प्रकाशित होने के पश्चात शीघ्र सूचना भेजने की व्यवस्था है,किन्तु जब तक इसके द्वितीयक स्रोत उपलब्ध नहीं होते सी.सी.आर.एच का उपयोग करने वाले उन अनुसंधान क्षेत्रों की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकते है, जिनमें उनकी अभिरुचि है। यह डाटा इस तरीके से,इस मात्रा और स्वरुप में प्रस्तुत किया जाता है कि सूचनाओं के संबंध में नवीनतम दृष्टिकोण की जानकारी प्राप्त हो सके।

सी.सी.आर.एच. ने 1988 में करेन्ट लिटरेचर अवेयरनैस सर्विस (सी.एच.एल.ए.एस.) की सूची प्रस्तुत की थी। इसे सी.सी.आर.एच. सूची में उल्लिखित निबंधों की फोटोप्रतियाँ शोधकर्ताओं के अनुरोध पर उन्हें उपलब्ध करवाई जाती हैं।

२. अनुक्रमाणीकरण तथा सूक्ष्मीकरण सेवा -

सूचना प्राप्त करने के उपादान के रुप में अनुक्रमीकरण तथा सूक्ष्मीकरण सेवा की महत्वपूर्ण भूमिका है। अनुक्रमिका से अभिलेखों को खोजने,संबंधित जानकारी प्राप्त करने और सूचनाओं में वृद्धि करने में सहायता मिलती है। सूक्ष्म सूचना में मूल जानकारी का संक्षिप्त रुप होता है,न कि उसका विवरण। सी.सी.आर.एच.ने 'चिकित्सा संक्षेप' प्रस्तुत किए हैं, जिनका संबंध तीन मुख्य विषयों - एडस,केन्सर और चर्मरोग विज्ञान से है। इन विषयों से संबंधित सभी निबंधों का अनुक्रम बनाया गया है और भारतीय तथा विदेशी चिकित्सा जरनलों के चालू वर्ष में प्रकाशित सामग्री का संक्षेप सार संकलित किया गया है।

३. विशिष्ट विषयो का ग्रन्थ विवरण -

सी.सी.आर.एच. ने निम्न विषयों की ग्रंथविवरण सूचियाँ तैयार की हैं-

1. होम्योपेथी और दाहक्षत (बर्न्स)
2. होम्योपेथी और अर्जित शिवत्र (विटिलिगो)
3. होम्योपेथी और कृमिउष्णता (हेलमिन्थियासिस)
4. होम्योपेथी और केन्सर

४. समाचार संकलन -

सामाजिक अर्थव्यवस्था और दैनिक जीवन के संदर्भ समाचार पत्रों में प्रकाशित रिपोटों का महत्व स्वतः स्पष्ट है । होम्योपेथी के सन्दर्भ में भी यह सूचना माध्यम महत्वपूर्ण होता जा रहा है । किसी भी समाज में चिकित्सा और सामान्य विज्ञान की छवि प्रतिबिम्बित करने का समाचार-पत्र सर्वश्रेष्ठ माध्यम है । समाचार पत्रों की सूचनाएँ संकलित करने की सेवा में पर्याप्त सहायता मिल सकती है,और इसे नवीनतम सूचना सेवा का एक नया प्रकार माना जा सकता है ।

सी.सी.आर.एच. 1989 से ही चिकित्सा विज्ञान और होम्योपेथी विकास के सम्बन्ध में समाचार-पत्रों की कतरनें एकत्र कर रही है । सी.सी.आर.एच.के संग्रह में विभिन्न चिकित्सा विषयों पर 15,086 समाचार कतरने हैं,जिन्हें समायानुक्रम तथा अकारादि क्रम से संग्रहीत किया गया है ।

५. अभिलेखीकरण –

250 होम्योपेथिक औषधियों का, उनकी उत्पत्ति,वनस्पति विज्ञान, सिद्धीकरण आदि के संदर्भ में अभिलेखीकरण अब तक पूरा किया जा चुका है ।

६. प्रकाशन –

(अ) लघु प्रबंध

1. एबरोमा आगस्टा
2. काली म्युरियाटिकम
3. केसिया सोफेरा
4. सिनोडोन डेक्टाइलोन

(ब) पुस्तकें –

1. होम रेमेडीज इन होम्योपेथी
2. सामान्य होम्योपेथी उपचार पुस्तिका (हिन्दी में)
3. चेकलिस्ट आफ होम्योपेथिक मेडिसिनल प्लांट्स आफ इण्डिया
4. एक्टिविटीज एण्ड एचीवमेन्ट्स आफ सी.सी.आर.एच.
5. केन्ट की रेपरटरी में बोरिक के अघ्याय 'दाँत' का परिवर्धन
6. केन की रेपरटरी में बोरिक के अघ्याय 'मुँह,का परिवर्धन

(स) सी.सी.आर.एच. समाचारों की त्रैमासिक बुलेटिन के तेरह अंक अब तक प्रकाशित हो चुके है, तथा सी.सी.आर.एच. न्यूज के अब तक उन्नीस अंक जारी किए गए है ।

(ग) साहित्यिक अनुसंधान

साहित्यिक अनुसंधान कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्ट की रेपरटरी की समीक्षा और पुनरीक्षण,अन्य ग्रन्थों के संदर्भ में बोरिक की रेपरटरी में परिवर्धन,बोगर बोनिंहासन की रेपरटरी में केन्ट की रेपरटरी में परिवर्धन और होम्योपेथिक चिकित्सा विज्ञान में उपचार शास्त्र का संपादन के कार्य संपन्न किए जा रहे हैं ।

(घ) प्रायोगिक अनुसंधान

होम्योपेथिक औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में होम्योपेथिक औषधियों के प्रभाव का आकलन करने के लिए प्रायोगिक अनुसंधान किया जा रहा है । इस अनुसंधान कार्य में इन औषधियों प्रजनन विरोधी सक्रियता तथा प्रयोगिक रुप में उत्पन्न की गई पित्ताश्मरता (कोलेलिथियासिस), धमनी काठिन्य (आर्टिरियोस्केलेरोसिस) तथा मधुमेह (डाइबिटिज मेलिटस) में निरोध और निदान का अध्यनन किया जा रहा है ।